अमेरिका में जीवन संवारते मुस्लिम

जेन. आई. स्मिथ

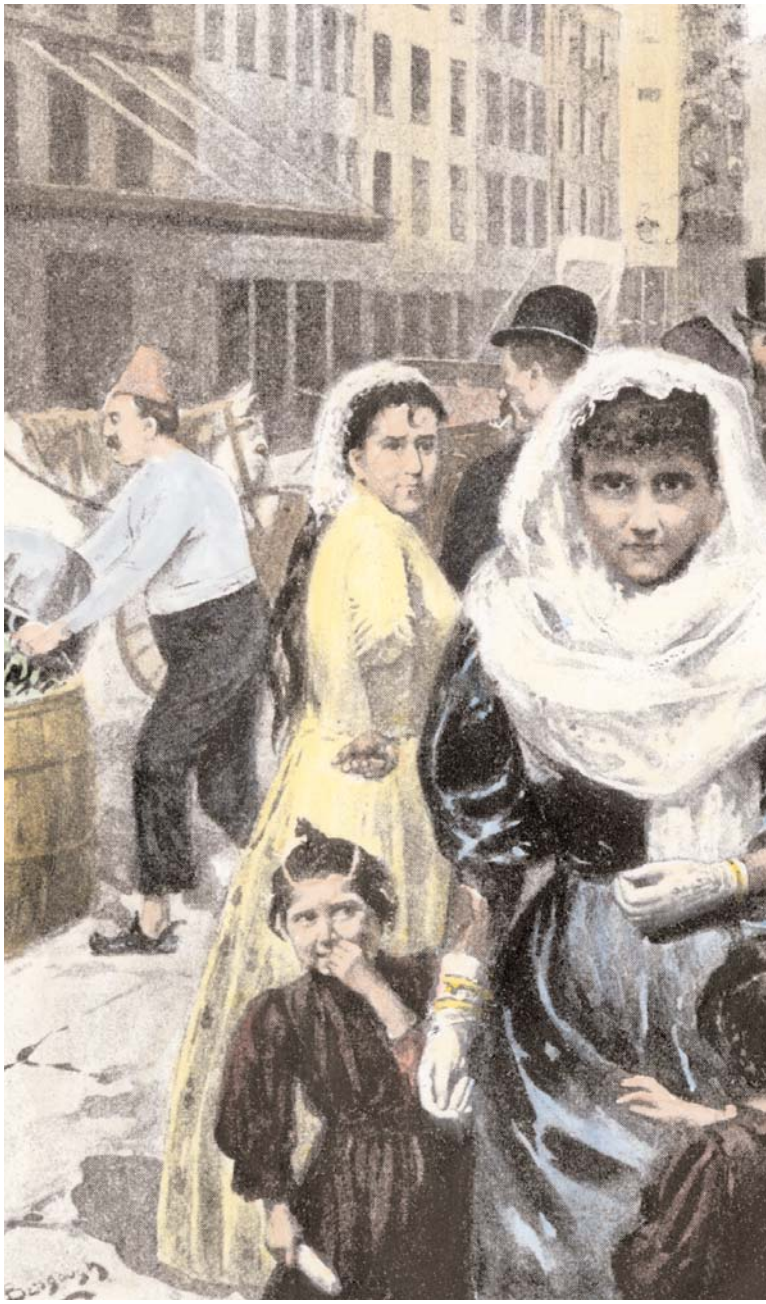

अमेरिका में आज जो मुसलमान रह रहे हैं, वे बहुत धाराओं और विशिष्टताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं: आप्रवासी और स्वदेशी, सुन्नी और शिया, रूढ़िवादी और उदारवादी, परंपरावादी और परंपराभंजक। अमेरिका में मौजूदा दौर में मुसलमानों की सटीक संख्या तय करना मुश्किल है लेकिन इनमें से आधे पहली, दूसरी या तीसरी पीढ़ी के आप्रवासी परिवार हैं।

18वीं और 19वीं शताब्दी में अमेरिका के दक्षिण में बागानों में काम करने के लिए आए अफ्रीकी गुलामों में कुछ मुस्लिम भी थे। लेकिन इनमें से कुछ ने ही अपनी पहचान मुसलमानों के रूप में बनाए रखी। इसलिए ज्यादातर मुस्लिम विद्वान 19वीं शताब्दी के बाद के हिस्से में मध्य-पूर्व से पश्चिम आए आप्रवासी मुसलमानों पर ही गौर करते हैं। मुस्लिमों का अमेरिका में आने का यह सिल-सिला कई अवधियों में शृंखलाओं के रूप में हुआ जिन्हें अक्सर 'लहर' के रूप में संबोधित किया जाता है। हालांकि इतिहासकारों में इस बात पर एक राय नहीं रही है कि वास्तव में लहर किसे माना जाए।

अमेरिका में आप्रवासियों का सबसे पहला आगमन 1875-1912 के बीच आज के लेबनान, सीरिया, जॉर्डन, फिलिस्तीन अथॉरिटी और इस्राइल के ग्रामीण इलाकों से हुआ। उस समय इस इलाके को वृहत्तर सीरिया कहा जाता था और इस पर ऑटोमान साम्राज्य का शासन था। इस क्षेत्र में आने वाले ज्यादातर लोग ईसाई थे। लेकिन कुछ मुस्लिम समूह भी थे जो आर्थिक कारणों से आए और अकेले थे। उन्होंने मजदूरों और व्यापारियों के रूप में काम किया। उनका इरादा सिर्फ अमेरिका में इतने ही दिनों तक रुकने का था कि ठीक-ठाक पैसा कमाकर अपने देश में घर पर मौजूद परिवार का भरण-पोषण कर सकें। कुछ ऐसे भी थे जो तुर्की सेना में जबरन रंगरूटों के रूप में भर्ती से बचने के लिए भाग आए थे। धीरे-धीरे ये लोग पूर्वी अमेरिका, मध्य-पश्चिम और प्रशांत तट के इलाकों में बसने लगे।

आप्रवासी लहर और अमेरिकी कानून

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद ऑटोमान साम्राज्य का पतन हो गया। इसके बाद मध्य-पूर्व के मुस्लिम क्षेत्र से आप्रवासी लोगों के रूप में दूसरी लहर आई। यह वह दौर था जब मध्य-पूर्व में पश्चिम का औपनिवेशिक शासन था। युद्ध के कारण लेबनान इतना तहस-नहस हो चुका था कि बहुत से लोगों को बचने के लिए भागना पड़ा। इससे बड़ी संख्या में मुस्लिमों ने पश्चिम की तरफ

जाने का फैसला किया। यह दौर मुस्लिमों के लिए आर्थिक के साथ राजनीतिक कारणों से भी अपना देश छोड़कर अन्यत्र जाने का रहा। बहुत-से लोग अपने उन रिश्तेदारों के पास आ गए जो पहले ही अमेरिका आ चुके थे और वहां स्थापित हो चुके थे।

अमेरिका में 1924 में नया आप्रवासन कानून पारित हुआ जिससे आप्रवासन की दूसरी लहर थम गई। इस कानून में 'राष्ट्रीय उद्गम कोटा प्रणाली' लागू

19वीं शताब्दी के बाद के हिस्से में बहुत से सीरियाई परिवार न्यूयॉर्क शहर में बस गए। बाएं प्रकाशित डब्ल्यू. बेंगोग के रेखांकन में निचले मैनहट्टन की वाशिंगटन स्ट्रीट में 1890 में सीरियाई आप्रवासी इलाके में रहने वाले लोगों का रोजमर्रा का जनजीवन और कामकाज दिखाया गया है।

हुई। इससे 1890 में विदेश में जन्मे अमेरिकी लोगों की जनसंख्या के मुताबिक मूल देश के हिसाब से आप्रवासियों के आने का कोटा तय कर दिया गया। बाद में इसे 1890 से 1920 कर दिया गया। इस प्रणाली के तहत 1930 के दशक में अमेरिका में मुसलमानों का आगमन बहुत कम हो गया। इस दौर में वही लोग आप्रवासी के रूप में ज्यादा आए जिनके रिश्तेदार अमेरिका में पहले से ही रह रहे थे क्योंकि कानून के तहत ऐसे लोगों को वरीयता मिली थी। अमेरिका में रहने वाले बहुत-से आप्रवासी लोग इस समय महसूस करने लगे कि अपने देश में घर वापस लौटने का उनका सपना शायद साकार नहीं हो पाएगा और उन्हें वही ताना-बाना बनाने की आवश्यकता महसूस हुई जो उन्हें अपने परिवार के रूप में अपने देश में मिला हुआ था जिससे उन्हें मदद मिलती थी।

अमेरिका में मुस्लिमों के आगमन की तीसरी जानी-पहचानी अवधि 1947 से 1960 के बीच की है। इस दौर में मध्य-पूर्व से दूर के देशों से भी ज्यादा संख्या में मुस्लिम अमेरिका आए। अमेरिका के 1953 के आप्रवासन और राष्ट्रीयता काननू में उद्गम देश के आधार पर तय कोटा फॉर्मूला में संशोधन किया गया। यह कानून 1920 में अमेरिकी जनसंख्या में विभिन्न मूल के लोगों की जनसंख्या के आधार पर था, इसलिए इस अवधि में आने वाले अधिकतर आप्रवासी पश्चिम यूरोप के ही थे। इसके बावजूद पूर्वी यूरोप (प्रमुख रूप से यूगोस्लाविया और अल्बानिया से) और सोवियत संघ सें भी मुस्लिम अमेरिका पहुंचे। वर्ष 1947 में उपहाद्वीप के बंटवारे के बाद भारत और पाकिस्तान से भी लोग अमेरिका पहुंचे। पहले पहुंचे लोगों ने अमेरिका के ग्रामीण और शहरी, दोनों ही इलाकों को अपना ठिकाना बनाया था। लेकिन तीसरी लहर के साथ आए मुस्लिम शहरी पृष्ठभूमि के थे और उन्होंने विशेष रूप से न्यूयॉर्क और शिकागो जैसे बड़े शहरों को ही अपना ठिकाना बनाया। इनमें से कुछ अपने मूल देशों के समृद्ध परिवारों के सदस्य थे। ये लोग पहले आए लोगों से ज्यादा शिक्षित थे और पश्चिम के तौरतरीके जानते थे। ये लोग अमेरिका इस उम्मीद में आए थे कि यहां इन्हें और बेहतर शिक्षा मिलेगी और तकनीकी प्रशिक्षण भी।

अमेरिका में मुसलमानों के आगमन की चौथी और सबसे ताजा लहर 1965 के बाद आई। इस साल राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन द्वारा लाए गए आप्रवासी विधेयक में राष्ट्रीय उद्गम के अनुसार कोटा प्रणाली की व्यवस्था खत्म कर दी गई। नई प्रणाली में अमेरिका में रहने वाले लोगों के रिश्तेदारों को वरीयता दी गई। इसके अलावा उन लोगों को भी वरीयता मिली जो ऐसे विशेष कामों में दक्ष थे जिनकी अमेरिका में जरूरत थी। नया कानून अमेरिकी इतिहास में एक मोड़ था जब 20वीं सदी के शुरुआती हिस्से के बाद किसी व्यक्ति के लिए अपने उद्गम देश पर गौर किए बिना ही अमेरिका पहुंचना संभव था। 1965 के बाद पश्चिम यूरोप से आने वाले आप्रवासियों की संख्या बहुत कम हो गई। लेकिन मध्य-पूर्व और एशिया से आने वाले आप्रवासियों की संख्या उसी अनुपात में बढ़ने लगी। इस दौर में अमेरिका आने वाले मध्य-पूर्व और एशिया के आप्रवासियों में आधे मुसलमान थे।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम कुछ दशकों से पहले ज्यादातर मुस्लिम अमेरिका में अपनी आर्थिक हैसियत बढ़ाने या शिक्षा पाने के लिए आए थे। कुछ लोग प्रथम विश्व युद्ध के बाद राजनीतिक उथल-पुथल के चलते आए थे। लेकिन पिछले दशकों में अमेरिका में मुसलमानों के आगमन का प्रमुख कारण उनके

अमेरिका में मुस्लिम जनसंख्या के आंकड़े

अमरिका में रहने वाले मुस्लिमों की मौजूदा संख्या के बारे में सही-सही अंदाजा लगाना बहुत मुश्किल है। गैर-मुस्लिम विद्वानों और जनसंख्या विशेषज्ञों की तुलना में मुस्लिम इस संख्या को कुछ ज्यादा बताते हैं। अनुमानित आंकड़ों में बहुत अंतर है- एक अध्ययन के अनुसार यह संख्या 20 लाख है तो कोई इसे 70 लाख तक बताता है।

मुस्लिमों की संख्या के इस अनुमान में बड़े अंतर के कई कारण हैं। पहली बात यह है कि अमेरिकी संविधान सरकार और चर्च को पृथक रखता है जो अमेरिकी कानून में परिलक्षित होता है। अमेरिका के जनसंख्या सर्वेक्षण के फॉर्म में लोगों से उनका धर्म नहीं पूछा जाता। अमेरिकी आप्रवासन सेवा भी आप्रवासियों के धर्म के आधार पर आंकड़े नहीं जुटाती। अमेरिका में बहुत-सी मस्जिदों में औपचारिक सदस्यता की नीति नहीं है और वहां कभी-कभार ही उपस्थिति के सही आंकड़े रखे जाते हैं।

शिकागो विश्वविद्यालय के विद्वान मार्टिन मार्टी के अनुसार, "संख्या की गणना दो स्रोतों पर निर्भर है। एक स्रोत है सर्वेक्षणकर्ताओं द्वारा लोगों से यह पूछना कि उनकी धार्मिक पसंद क्या है? दूसरा स्रोत राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर के धार्मिक नेता हैं। टेलीफोन पर जवाब देने वालों द्वारा खुद को इस या उस या फिर किसी भी समूह का हिस्सा नहीं बताने के पीछे कोई खास उद्देश्य हो सकता है। विभिन्न कार्यक्रमों में जुटने वाले लोगों की संख्या बताने वालों के भी कई तरह के उद्देश्य हो सकते हैं।

कुलमिलाकर नतीजा यही निकलता है कि अमेरिका में मुस्लिमों की जनसंख्या का कोई अधिकृत आंकड़ा नहीं है। न ही इस मसले का अध्ययन करने वाले किसी ऐसे आंकड़े पर पहुंचे हैं जो सभी को मान्य हो।

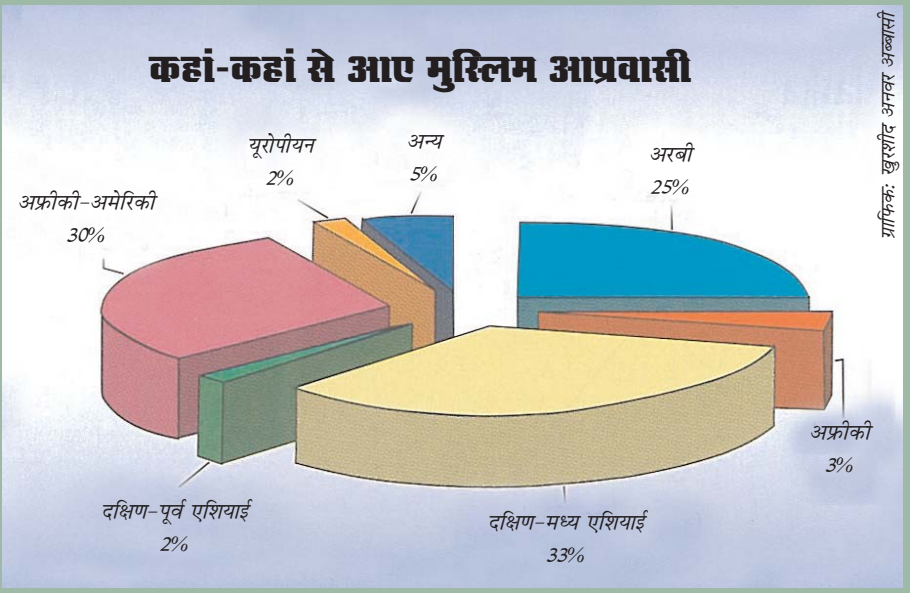

ग्राफिक: खुरशीद अनवर अब्बासी

अपने देश में राजनीतिक उथल-पुथल ज्यादा रही है। वर्ष 1967 में अरब देशों की इस्राइल के हाथों हार और लेबनान के गृह युद्ध के बाद बहुत से मुसलमान आप्रवासी और शरणार्थी के रूप में पश्चिम पहुंचे।

ईरानी क्रांति और 1979 में इमाम खुमैनी के सत्ता में आने और उसके बाद ईरान-इराक में एक दशक तक चले युद्ध के कारण कुछ ईरानी पश्चिमी देशों में आ गए। इनमें से बहुत-से अमेरिका में बस गए और बड़ी संख्या में कैलिफोर्निया चले गए। अनुमान है कि अमेरिका में आज ईरानी मूल के लगभग 10 लाख लोग हैं। कुवैत पर इराकी कब्जे और फारस की खाड़ी में युद्ध के बाद बड़ी संख्या में कुर्द भी अमेरिका आए। राजनीतिक अस्थिरता और गृह युद्ध के कारण हाल में अमेरिका आने वालों में सोमालिया, सूडान, अन्य अफ्रीकी देश, अफगानिस्तान और पूर्व यूगोस्लाविया में नस्लीय टकराव के शिकार मुस्लिम शरणार्थी शामिल हैं।

कई दशकों से भारत और पाकिस्तान में चले कई तरह के टकराव के कारण इस उपमहाद्वीप के बहुत-से लोग पश्चिम के शांतिप्रिय माहौल में जाने को प्रोत्साहित हुए। इंग्लैंड और अमेरिका उनके जाने के ज्यादा लोकप्रिय स्थान रहे। बीसवीं शताब्दी के शुरुआत में लंबे अरसे तक अमेरिका आने वाले मुस्लिम आप्रवासियों में पाकिस्तानी, भारतीय और बांग्लादेशियों की संख्या कम थी। लेकिन पिछले कुछ दशकों में इनकी संख्या बढ़ी है और संभवत: दस लाख से ज्यादा पहुंच गई है। पाकिस्तान और भारत के मुसलमानों में बहुत से डॉक्टर, इंजीनियर जैसे कुशल प्रोफेशनल है। इन लोगों ने अमेरिका में मुस्लिम राजनीतिक समूह विकसित करने और मस्जिद समुदाय के नेतृत्व में भी अहम भूमिका अदा की है। आज इंडोनेशिया और मलयेशिया जैसे देशों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में मुस्लिम अमेरिका आ रहे हैं। इनमें से बहुत से आप्रवासी उच्च प्रशिक्षण प्राप्त होते हैं और अमेरिका में मुस्लिमों के बीच अक्सर नेतृत्व के ऊंचे मुकाम पर पहुंच जाते हैं।

सुन्नी और शिया, दोनों तरह के अरब मुस्लिम अमेरिका के मुस्लिम समुदाय का महत्वपूर्ण हिस्सा बने हुए हैं। वे ज्यादा संख्या में उच्च शिक्षा हासिल कर रहे हैं, सफल प्रोफेशनल बन रहे हैं और राष्ट्रों और जातीय सीमाओं से परे अमेरिकी इस्लाम के मुखिया भी हैं। इनके अलावा तुर्क, पूर्वी यूरोपीय और अफ्रीकी देशों घाना, केन्या, सेनेगल, उगांडा, केमरून, गुयाना, सिएरा लोन, लाइबेरिया, तंजानिया समेत बहुत-से अफ्रीकी देशों के आप्रवासी उस मिश्रित समुदाय का हिस्सा हैं जो अमेरिकी उम्मा कहलाता है। आप्रवासी मुस्लिम एक-दूसरे के साथ संबंधों और प्रभावी तौर पर काम करने के तौर-तरीकों पर गौर कर रहे हैं। उन्हें इस सवाल से भी जूझना पड़ता है कि विभिन्न अफ्रीकी-अमेरिकी मुस्लिम आंदोलनों के सदस्यों से क्या नाता रखें। हाल में आए अफ्रीकी आप्रवासी कई बार धर्म और जाति के घालमेल को खास तौर पर जटिल पाते हैं। शताब्दी के शुरू में अरब देशों से अमेरिका आप्रवासन के शुरुआती दिनों में बहुत से मुस्लिमों ने अपनी स्थिति बेहतर करने के लिए मेहनत-मजदूरी वाले काम हाथ में लिए, जैसे कि आप्रवासी मजदूर के रूप में, छोटेमोटे कारोबार या फिर खदानों में। सभी देशों के पिछली पीढ़ी के आप्रवासियों ने इस तरह के काम हाथ में लिए थे। अरब देशों से आए बहुत से मुस्लिम फेरीवाले बन गए। यह ऐसा काम था जिसमें भाषाई दक्षता, प्रशिक्षण या पूंजी की जरूरत बहुत कम थी। बहुत से अन्य लोग पश्चिम में तेजी से बढ़ते रेल-सड़क निर्माण की गतिविधियों जैसे कार्यों से जुड़े कामगारों के समूह में शामिल हुए। मुस्लिम आप्रवासी महिलाएं भी अमेरिका में पहले से रह रहे पुरुष आप्रवासियों के साथ आने लगीं तो उन्हें अक्सर मिलों और कारखानों में काम मिलता जहां उन्हें मुश्किल परिस्थितियों में लंबे समय तक काम करना पड़ता। ये शुरुआती साल अमेरिका में मुसलमानों के लिए मुश्किल भरे थे। बहुत-से लोग अकेलेपन, गरीबी, अंग्रेजी न आने, संयुक्त परिवार के अभाव और सहधर्मियों की गैर-मौजूदगी से परेशान थे। लेकिन अमेरिका में रहने की अवधि बढ़ने के साथ-साथ धीरे-धीरे ज्यादा से ज्यादा मुस्लिमों ने यह समझ लिया कि वापस लौटने का विकल्प अब संभव नहीं है और इसीलिए वे अमेरिका में रचने-बसने की तैयारी करने लगे। वे किसी न किसी तरह से विवाह के बंधन में बंधने लगे- अमेरिका में मुस्लिम जीवनसाथी नहीं खोज पाने वाले युवाओं ने अपने मूल देश की लड़कियों से शादी की और उन्हें अमेरिका ले आए। कई ने अपने धर्म के दायरे के बाहर जाकर शादी कर ली। उन्होंने ज्यादा स्थायी रोजगार वाले काम-धंधे तलाशना शुरू किया। अपने पारंपरिक कौशल के बूते

ए. पी. वर्ल्ड फोटोज

राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन ने 3 अक्टूबर 1965 को न्यूयॉर्क हार्बर के लिबर्टी आइलैंड में नए आप्रवासी विधेयक पर हस्ताक्षर किए।

उन्होंने रेस्टोरेंट, कॉफी हाउस, बेकरी, किराने की दुकान आदि शुरू की। उन्होंने अंग्रेजी सीखी और वे आर्थिक लिहाज से ज्यादा आत्मनिर्भर होने लगे। सामुदायिक संस्थाएं बनाने के लिए वे अन्य मुस्लिमों से तालमेल बढ़ाने लगे जिससे कि इनमें अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा दे सकें।

लेकिन अमेरिका में मुस्लिमों को जिंदगी कभी-कभार ही आसान लगी। अमेरिका को आप्रवासियों का देश कहा जाता है। सभी नस्लों और जातीय समूहों के मिलन का पात्र लेकिन नस्लीय पूर्वाग्रह निश्चित रूप से थे, खासकर 1960 के दशक के नागरिक अधिकार आंदोलन के पहले तक। इसलिए बहुत वर्षों तक बहुत-से मुस्लिम आप्रवासियों ने अपनी धार्मिक और जातीय पहचान छिपाने का प्रयास किया। अपने नाम बदल लिए जिससे कि वे ज्यादा अमेरिकी लगें। उन्होंने ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने और ऐसी पोशाकें पहनने से परहेज किया जो उन्हें सामान्य नागरिकों से अलग दिखाएं। धीरे-धीरे जब मुस्लिम आप्रवासी समुदाय ज्यादा बड़ा, ज्यादा विविध, ज्यादा शिक्षित और अपनी समझ को लेकर ज्यादा स्पष्टवादी होने लगा तो अमेरिकी समाज में रचने-बसने के प्रयास हुए। इससे अमेरिका में रहने के महत्व लेकिन साथ ही अपनी

ए. पी. - डब्ल्यू डब्ल्यू पी.

मई 1999 में फोर्ट डिक्स, न्यू जर्सी में अल्बानियाई शरणार्थी डाइनिंग हॉल के बाहर नमाज पढ़ रहे हैं।

धार्मिक संस्कृति को बचाए रखने के मसले पर विवेकपूर्ण ढंग से विचार-विमर्श होने लगा। इस विचार-विमर्श का एक संबंध ग्रामीण और शहरी अमेरिका में सुन्नी और शिया संस्थाओं के गठन से और हाल के वर्षों में उनके धार्मिक, राजनीतिक, प्रोफेशनल और सामाजिक मेलजोल से जुड़े राष्ट्रीय मुस्लिम संगठनों से है।

अब पूरे अमेरिका में फैले हुए हैं मुस्लिम

आज अमेरिका में ऐसे कम ही स्थान हैं जहां मुस्लिमों को रहते हुए, काम करते हुए और अपने बच्चों को पब्लिक स्कूलों में भेजते न देखा जाए। मुस्लिमों के नमाज पढ़ने के लिए अब ऐसी मस्जिद जैसी सुविधाएं आम हैं जिन्हें स्पष्ट पहचाना जा सकता है।

अमेरिका में पहला मुस्लिम सामुदायिक संगठन मध्य-पश्चिम में बना। उत्तरी डकोटा में मुस्लिमों ने बहुत पहले वर्ष 1900 के दशक में नमाज पढ़ना शुरू किया। इंडियाना में वर्ष 1914 में ही एक इस्लामिक सेंटर स्थापित हो चुका था। सेडार रैपिड्स (आयोवा) में सबसे पुरानी मस्जिद है जिसका अब भी इस्तेमाल हो रहा है। डेट्रोइट के बाहर डीयरबोर्न (मिशिगन) मध्य-पूर्व के बहुत-से इलाकों से आए शिया और सुन्नी मुसलमानों का घर रहा है। बहुत से लोग फोर्ड मोटर कंपनी के संयंत्र में काम करने के मौके के चलते आए। सामुदायिक संगठन बनाने के चलते और मुस्लिम भी उनसे जुड़ गए। मध्य-पूर्व के इसाइयों के साथ मिशिगन के ये मुस्लिम अमेरिका में बसने वाला सबसे बड़ा अरब-अमेरिकी समुदाय है।

अमेरिका आने वाले आप्रवासी मुस्लिमों के पसंदीदा इलाकों के रूप में अन्य अमेरिकी शहर भी प्रमुखता के साथ शामिल रहे हैं। क्विंकी के शिपयार्ड, मेसाच्यूसेट्स और बोस्टन के बाहरी इलाकों ने वर्ष 1800 के बाद के दशकों से मुस्लिम आप्रवासियों को कामकाज उपलब्ध कराया है। न्यू इंग्लैंड का मौजूदा इस्लामिक सेंटर 20वीं सदी के शुरुआती हिस्से में वहां बसने वाले थोड़े से परिवारों के समूह का सपना था। अब यहां बड़ा मस्जिद परिसर बन चुका है जहां व्यापार से जुड़े लोग, अध्यापक और अन्य प्रोफेशनल के साथ-साथ व्यापारी और कामगार भी पहुंचते हैं।

न्यूयॉर्क शहर में पिछली एक शताब्दी से इस्लाम मौजूद है और यह नजर में आता है। न्यूयॉर्क अपने इतिहास के ज्यादातर हिस्से में अमेरिका का सबसे बड़ा शहर रहा है और यहां बहुत से जातीय समूहों और मुस्लिमों की रिहायश रही है। इनमें समुद्री नाविक, कारोबारी लोग, मनोरंजन जगत से जुड़े लोग, प्रोफेशनल और बड़े व्यापारी शामिल हैं। न्यूयॉर्क के मुस्लिम एक तरह से राष्ट्रीयताओं का व्यापक स्पेक्ट्रम पेश करते हैं जिसमें दुनिया के सभी देश आ जाते हैं। न्यूयॉर्क में मस्जिद बनाने का काम भी फला-फूला है। राष्ट्रीय मुस्लिम संगठनों को अपनी गतिविधियों के लिए यह इलाका विशेष रूप से भाता रहा है। शहर में चारों तरफ बड़ी संख्या में प्राथमिक और उच्च स्तर के मुस्लिम स्कूल, मुस्लिम स्टोर और कारोबार शुरू हो रहे हैं।

शुरुआत में आप्रवासी मुस्लिमों की शरणस्थली शिकागो, इलिनोइस भी रही। कुछ लोग दावा करते हैं कि 19वीं शताब्दी के शुरू में यहां किसी भी अन्य अमेरिकी शहर की तुलना में ज्यादा मुस्लिम रहते थे। आज शिकागो में मध्य-पूर्व, भारत, मध्य और दक्षिण एशिया और दुनिया के बहुत से भागों के मुस्लिम रहते हैं। ये लोग अपने धर्म को बढ़ावा देने में सक्रिय हैं और मुस्लिम समुदाय को कई तरह की सेवाएं उपलब्ध कराते हैं। ये लोग आपस में और गैर-मुस्लिमों से भी मेलजोल रखते हैं। वृहत्तर शिकागो में 40 से भी ज्यादा मुस्लिम समूह स्थापित किए गए हैं।

इसी तरह कैलिफोर्निया के लॉस एंजिलीस और सैन फ्रांसिस्को में भी मुस्लिमों को फलने-फूलने का माहौल मिला है। यहां भी दुनिया के सभी मुस्लिम क्षेत्रों के लोग हैं। हाल ही में अफगानी, सोमालियाई और अन्य अफ्रीकी देशों के नागरिक भी आए हैं। दक्षिण कैलिफोर्निया का इस्लामिक सेंटर अमेरिका में मुस्लिमों का बड़ा केंद्र है। इसके अच्छी तरह से प्रशिक्षित लोग अपने लेखों और सामुदायिक नेतृत्व के लिए जाने जाते हैं। सेंटर का प्रभावित करने वाला भौतिक केंद्र वह हर सुविधा उपलब्ध कराता है जिसकी आप्रवासी मुस्लिमों को जरूरत पड़ सकती है।

आज के मुस्लिम आप्रवासियों को अमेरिका में रहने में अब भी कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और वे इनसे कई तरह से जूझते हैं। पहचान, व्यवसाय, पोशाक और संस्कृति-संक्रमण के मुद्दे बहुत-से अमेरिकी मुस्लिमों के लिए विशेष रूप से अहम हैं। अन्य प्रमुख मसलों में विभिन्न नस्लीय और जातीय मुस्लिम समूहों और अमेरिकी मुस्लिमों से संबध, अपने बच्चों को इस्लामी शिक्षा कहां और कैसे दें और महिलाओं की उचित भूमिका तथा अवसर के मुद्दे शामिल हैं।

बहुत-से मुस्लिम अमेरिकी जीवन की मुख्य धारा से अलग-थलग रहने के दौर से हटकर अब राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में ज्यादा सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि अमेरिकी मुस्लिम अपनी पहचान के अगले चरण में प्रवेश कर रहे हैं जहां इस तरह के मसलों का सामना किया जा रहा है और उन्हें नए और रचनात्मक तरीकों से सुलझाया जा रहा है। इसका नतीजा यह है कि बहुत-सी राष्ट्रीयताओं, नस्लीय और जातीय पहचानों के मिलन से सच्चा अमेरिकी इस्लाम उभरने की प्रक्रिया चल रही है। □

लेखिका: *जेन आई. स्मिथ हार्टफोर्ड, कनेक्टीकट में हार्टफोर्ड सेमिनरी में मुस्लिम और ईसाई-मुस्लिम संबंधों के अध्ययन से संबंधित मैक्डोनाल्ड सेंटर की सह-निदेशक और इस्लामिक अध्ययन की प्रोफेसर हैं। वह मुस्लिम वर्ल्ड की सह-संपादक भी हैं जो मुस्लिम और ईसाई-मुस्लिम संबंधों के अध्ययन पर केंद्रित है।*